RNI Regn.No.- 54447/78 स्थापित: 1978 Postal Reg. No. UA/NTL- 08/ 2021-23

पिघलता हिमालय

वर्ष 38 अंक 50 हल्द्वानी सम्वत् 2080 सोमवार 22 मई 2023 एक प्रति 5 रु., वार्षिक-200 रु. आजीवन 2000 रु.

संस्थापक- स्व.आनन्द बल्लभ उप्रेती
स्व.दुर्गा सिंह मर्तोलिया,
स्व.श्रीमती कमला उप्रेती

editorpighaltahimalay@gmail.com
Website-
www.pighaltahimalay.com

सम्पादक : श्रीमती गीता उप्रेती
संरक्षक : फली सिंह दत्ताल
मंगल सिंह मर्तोलिया

उत्तराखण्ड की पहलवानी

मंत्री प्रेमचन्द अग्रवाल को लेकर गुस्सा तो उपजा ही है

कार्यालय प्रतिनिधि

जंतर-मंतर में पर बैठे पहलवानों के समर्थन में प्रदर्शन

दिल्ली में महिला पहलवानों की ओर से किये जा रहे प्रदर्शन के समर्थन में उत्तराखण्ड में भी कई संगठनों ने कार्रवाई की मांग की है। साथ ही कैबिनेट मंत्री की ओर से आमजन के साथ की गुण्डागर्दी की निन्दा की है। खिलाड़ियों के समर्थन में हल्द्वानी स्पोर्ट्स एसोसिएशन के द्वारा बुद्ध पार्क तिकोनिया पर धरना किया गया। जिसमें हल्द्वानी महानगर के पूर्व खिलाड़ी, वर्तमान खिलाड़ी, खेल प्रेमी एवं खेलों को प्रोत्साहित करने वाले लोगों ने भागीदारी की। ऐसोसिएशन के अध्यक्ष नवीन वर्मा, कार्यकारी अध्यक्ष मोहन बोरा, सचिव गोपाल बेलवाल ने दिल्ली के खिलाड़ियों के समर्थन में पूर्ण समर्थन दोहराया। बाजपुर में भूमि बचाओ मुहिम के संयोजक किसान नेता जगतार बाजवा के नेतृत्व में काली पट्टी बांधकर केन्द्र सरकार के रवैये की निन्दा की। कहा कि कुश्ती संघ अध्यक्ष ब्रजभूषण से इस्तीफा लेने के बजाय उन्हें संरक्षण दिया जा रहा है। साथ ही पहलवानों के धरने को बदनाम करने की साजिशें रची जा रही हैं, जिसे बर्दाश्त नहीं किया जायेगा। कांग्रेस सहित विपक्षी दलों ने कुश्ती संघ अध्यक्ष पर सख्त कार्रवाई की मांग करते हुए ज्ञापन सौंपे हैं।

दिल्ली में चल रहे प्रदर्शन को लेकर जिस प्रकार की जिद और बयान के साथ राजनीति होने लगी है, उसका असर निश्चित रूप से चारों ओर हो रहा है। मामला देश के बड़े महिला खिलाड़ियों द्वारा दबंग सांसद ब्रजभूषण पर लगाये गये यौन उत्पीड़न का है। पहलवानों की समर्थन में उतरे किसान, छात्र, महिला संगठनों के की आवाज को लम्बा करने के लिये उत्तराखण्ड में भी कई जगह प्रदर्शन किया गया है। साथ ही प्रदेश के कबीना मंत्री प्रेमचन्द्र अग्रवाल का प्रसंग भी तरोताजा है। मंत्री द्वारा की गई हाथापाई को लेकर लोगों में गुस्सा तो उपजा ही है। कहा जा रहा है कि आखिर उत्तराखण्ड में ये कैसी पहलवानी होने लगी है? आरएसएस के कार्यकर्ता सुरेन्द्र नेगी के साथ मंत्री जी के झगड़ के बाद से लगातार बयानबाजी और प्रदर्शन हो रहे हैं। नेगी के परिजन और साथी प्रेमचन्द्र अग्रवाल पर कार्रवाई की मांग कर रहे हैं। बताया जा रहा है कि मंत्री द्वारा हाथापाई प्रकरण की वीडियो सहित पूरा मामला पार्टी के शीर्ष नेताओं तक पहुँचाया गया है। प्रदेश में आम चर्चा है कि जब अपनी ही पार्टी कार्यकर्ता के साथ मंत्री की पिटाई पर कोई कार्रवाई नहीं हो रही है तो किसी दूसरे के साथ यदि ऐसा हुआ होता तो कौन सा न्याय मिल जाता? प्रेमचन्द्र अग्रवाल अपने कामकाज में जुटे हैं लेकिन उनके खिलाफ गुस्सा और पार्टी की किरकिरी तो हो ही रही है।

परम्परा और स्वास्थ्य का प्रतीक मोटे अनाज

डॉ.हरीश चन्द्र अण्डोला

पोषक अनाज वर्ष (आईवाईओएम) 2023 में जी-20 की थीम 'मिलकर उबरेंगे, मिलकर मजबूत होंगे' के साथ तालमेल बिठाते हुए, भारत पौष्टिकता से भरपूर मोटे अनाज के निर्यात पर अधिक जोर देकर एक सेहतमंद दुनिया बनाना चाहता है। परम्परागत रूप से उगाए और औषधीय गुणों वाले अनाज भारत की नई पहचान बना रहे हैं। इसकी खेती से पर्यावरण को भी कोई नुकसान नहीं होता है। बाजरा, रागी, कैनरी, ज्वार और कुट्टू अब विश्व स्तर पर अपनी उपस्थिति दर्ज कराने जा रहे हैं। कोविड-19, जलवायु परिवर्तन, कैलोरी सेवन सम्बन्धी जागरूकता को लेकर ऐसे नुकसानदेह परिवर्तन देखने को मिले हैं, जिससे दुनिया का ध्यान इस स्मार्ट फूड (पौष्टिक मोटा अनाज) और इसके पोषण लाभ की ओर गया। 19 प्रतिशत की हिस्सेदारी के साथ भारत मोटे अनाज का सबसे बड़ा उत्पादक है और अब देश ने मोटे अनाज की क्रान्ति लाने की जिम्मेदारी अपने कन्धों पर उठा रखी है। एपीडा की मार्केटिंग रणनीति के साथ दुनियाभर में मोटे अनाज के आयात को लक्षित कर भारत के निर्यात में एक क्रान्तिकारी बदलाव लाया जा रहा है। मोटे अनाज की निर्यात सम्वर्धन रणनीति के हिस्से के रूप में सम्बन्धित संस्थान ने मिलेट सम्मेलन आयोजित किया। इसका उद्देश्य भारत को आगे ले जाने और व्यापार करने वाले शीर्ष 100 देशों के बीच पोषण महत्व के साथ मोटे अनाज के मूल्यवर्धित नए उत्पादों की व्यापक श्रृंखला को प्रदर्शित कर जागरूकता लाना था। भारत की ओर से पेश किए जाने वाले अनूठे उत्पादों को दिखाने के लिए खरीदारों को आमंत्रित किया गया। दुनियाभर में हर शख्स के खाने की प्लेट और हर भोजन में भारतीय मोटे अनाज की जगह सुरक्षित करना मकसद है। वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय के तहत काम करने वाले कृषि और प्रसंस्कृत खाद्य उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण (एपीडाऋ)की योजना 2025 तक 100 मिलियन डॉलर का लक्ष्य हासिल करने की है। भारत की क्षमता का आकलन करते हुए एक व्यापक वैश्विक मार्केटिंग अभियान तैयार किया जा रहा है। इसके अनुसार 30 आयातक देशों और 21 मोटे अनाज के उत्पादक राज्यों का ई-कैटलॉग तैयार किया गया है। मोटे अनाज और इसके मूल्यवर्धित उत्पादों के निर्यात को प्रोत्साहन देने के लिए एक वर्चुअल ट्रेड फेयर प्लेटफार्म शुरू किया गया है। पूरी दुनिया पोषण सुरक्षा की तरफ बढ़ रही है, ऐसे में एक दशक में मोटे अनाज के अन्तर्राष्ट्रीय आयात में 5.4 प्रतिशत मूल्य में और 14 प्रतिशत मात्र में वृद्धि दर्ज की गई है। अपनी विशेष और उत्कृष्ट गुणवत्ता के कारण मोटे अनाज की तरफ पूरी दुनिया का धयान गया है क्योंकि यह ग्लूटेन-मुक्त, उच्च प्रोटीन और उच्च फाइबर का स्रोत होता है। चावल और गेहूं का विकल्प होने के नाते, मोटा अनाज मधुमेह प्रबन्धन, वजन घटाने में निम्न ग्लाइसेमिक इंडेक्स (जीआई) में मदद के साथ ही खून की कमी, रक्तचाप और हृदय सम्बन्धी परेशानियों में फायदेमंद है। हर तरह से मोटे अनाज को गेहूं, चावल और मक्के से बेहतर माना जाता है और अगर भारत पौष्टिक मोटे अनाज के साथ रोग उन्मूलन की दिशा में आगे बढ़ता है तो ये मधुमेह रोगी और खून की कमी वाली महिलाओं के लिए सुझाए गए आहार में एक तिहाई अनाज की जगह ले सकता है। रोज प्रति व्यक्ति 100 ग्राम मोटा अनाज खाया जाता है तो भारत पोषक अनाज वर्ष (आईवाईओएम) के 'मोटा अनाज, हर आहार में एक प्रमुख भोजन' के लक्ष्य को प्राप्त कर सकता है। भारतीय मोटे अनाज के निर्यात को बढ़ावा देने के लिए, केन्द्र सरकार 16 से अधिक अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार मेले में क्रेता-विक्रेता सम्मेलन का आयोजन कर विभिन्न अन्तर्राष्ट्रीय आयोजनों में व्यापारियों, एवफपीओ/एवफपीसी, निर्यातकों की भागीदारी को सुविधाजनक बनाने की दिशा में काम कर रही है। एफएओ द्वारा रोम, इटली में अपने मुख्यालय में आयोजित आईवाईओएम 2023 के एक कार्यक्रम में भारत पहले ही मोटे अनाज और इसके मूल्य-वर्धित उत्पादों को बढ़ावा दे चुका है। भारतीय दूतावास के सहयोग से जकार्ता और मेडन, इंडोनेशिया में क्रेता-विक्रेता बैठकें आयोजित की गईं। गल्फफूड 2023- दुबई यूएई, फूडेक्स- जापान, फाइन फूड- आस्ट्रेलिया, अनुगा फूड फेयर, जर्मनी

शेष पृष्ठ 5 पर

(विख्यात पत्रकार शरद जोशी के व्यंग्य, लघु कथाएँ और भाषा सत्ता और सत्ता से बाहर सभी को झकझोरने वाली थे। उनकी याद के साथ यह लेख)

अस्पताल में पाजामा बदलना

शरद जोशी

रोज अथवा दिन में दो बार चूँकि हम पाजामा पहनने वाले इस काम को सहज कर लेते हैं, इसकी कठिनाई भुला गए हैं या सच यह है कि एक पाजामा बदल कर दूसरा पहनना आसान काम नहीं है। खासकर अस्पताल में। मैं अभी काई बीस दिन अस्पताल में डोला रहा और महसूस किया कि प्रतिदिन पाजाम बदल गया पहन लेने का काम धीरे-धीरे स्वस्थ हो जाने की अपेक्षा अधिक कठिन है। इसका शरीर की बीमारी से कोई सरोकार नहीं। अस्पताल में जरूर यह कार्य अपने में एक बीमारी हो जाता है।

यह विचित्र होगा कि मैं आपका ध्यान पाजामे की ओर दिलाऊं। छठी कक्षा में जब हमें अंग्रेजों का व्याकरण घोट कर याद करना पड़ा था तब एक मजाक चलता था। कोई भी लड़का दूसरे से पूछता बोलो पाजामा सिंग्लूरल है अथवा प्लूरल। इसका होशियार उत्तर बनता, ऊपर से सिंग्लूरल, नीचे से प्लूरल। यों यह मजाक मनुष्य के साथ भी है। यह ऊपर ऊपर से सिंग्लूरल हो धीरे-धीरे कमर के नीचे से प्लूरल होता चला जाता है। ये पाजामा जैसा है वैसा है। सम्राट कनिष्क के काल में भी ऐसा था और आज भी भारतीय फेशन डिजाइनर उसमें एकाध जेब बनाने और पतलुननुमा बटन लगा देने के कुछ विशेष नहीं कर पा रहे हैं। नाड़ा पाजामा की आत्मा है सो रहेगी। नाड़े के कारण पजामा प्रतिबद्धता अर्जित करता है अन्यथा वह कब अवसर

शेष पृष्ठ 2 पर

(21 मई 1944 - 22 फरवरी 2013)

स्व.आनन्द बल्लभ उप्रेती

(संस्थापक-सम्पादक पिघलता हिमालय)

की

79 **वीं जयन्ती पर शत शत नमन।**

आपकी प्रेरणा के सहारे
पि.हि. के मिशन को चलाने के लिये
संकल्पित
पिघलता हिमालय परिवार
एवं
परिजन

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

पिघलता हिमालय

सुगम-दुर्गम दबादलों में न्याय मिले

शिक्षा विभाग में दस साल से अधिक समय से एक ही स्थान पर जमे सभी शिक्षकों के तबादले किए जाने की तैयारी है। शिक्षा मंत्री धनसिंह रावत का ऐलान और अधिकारियों को प्रस्ताव तैयार करने के निर्देश हैं। लेकिन..... यह सब इतना आसान है क्या? कैसा सुगम और कैसा दुर्गम? जिनके सिरहाने तकिया लगा है उसे कौन हिला सकता है?

सुगम-दुर्गम के पेंच में सनते शिक्षक व कर्मचारी तभी खिन्न होते हैं जब उन्हें दिखाई देता है कि न्यायपूर्ण बात नहीं हो रही है। ऐसे कई उदाहरण दिखाई देते हैं जिनके लिये साफ कहा जाता है कि इनका कोई कुछ नहीं कर सकता। इस बार मंत्री ने प्रस्ताव पारित करने के साथ ही वार्षिक स्थानान्तरण नीति के तहत पात्र कार्मिकों की सूची शीघ्र तैयार करने को कहा है तो उम्मीद एक बार फिर से की जानी चाहिये।

स्थानान्तरणों के मामले में शासन की नीति एकदम स्पष्ट होनी चाहिये कि चाहे कोई भी कार्मिक हो उसे नियत समय पर स्थानान्तरित कर दिया जायेगा। देखने में आता है कि बड़े शहरों में अपने किसी संरक्षण की वजह से टिके शिक्षक-कर्मचारी वर्षों से एक ही स्थान पर हैं, और यदि उनका स्थानान्तरण किया भी जाता है तो उसी शहर के दूसरे स्थान पर सरका दिया जाता है। यह सब देख उन कर्मचारियों-शिक्षकों में सन्देह होना स्वाभाविक है कि यह सब क्या हो रहा है? कर्मचारी नेता और संगठन कहते है। कि तबादलों की प्रक्रिया सुगम और सहज होनी चाहिये। विभागीय बैठकों में भी यह मामला उठ चुका है।

माना जा रहा है कि इस बार तबादला एक्ट बनने के बाद पन्द्रह प्रतिशत तबादले होने ही हैं। शिक्षा मंत्री ने कहा है कि दस साल से अधिक सुगम और दुर्गम में ठहराव वाले प्राथमिक, साहायक प्राध्यापक एलटी और प्रवक्ताओं की अलग-अलग सूची तैयार कर यह देख लिया जाए कि कितने शिक्षक तबादलों के दायरे में आ रहे हैं। उच्चशिक्षा विभाग में भी हलचल है कि तबादले होंगे। जुलाई तक शिक्षक-कर्मचारी इधर-उधर हो सकते हैं। यह होना जरूरी भी है क्योंकि एक ही स्थान पर वर्षों से जमे कार्मिकों के कारण बेशर्मी का सन्देश फैल रहा है। यदि उन्हें स्थानान्तरित किया जाता है तो सरकार की पारदर्शिता पर विश्वास होगा।

इसके अलावा रिक्त पदों पर तैनाती करना भी सरकार के संकल्प का हिस्सा है। शिक्षक, डाक्टर व अन्य पहाड़ की नौकरी पर खुशी-खुशी जाएं इसके लिये खाका तैयार होना जरूरी है। कर्मचारी इसी लिये पहाड़ चढ़ने से बचता है क्योंकि उसे पता है कि एक बार पहाड़ जाने का मतलब फिर वह मैदान में नहीं उतर पायेगा। इसलिये जरूरी है कि स्थानान्तरण प्रक्रिया एकदम पारदर्शी और न्यायप्रिय हो ताकि कर्मचारी गण विश्वास से भरे हों।

अस्पताल में पाजामा.....

प्रथम पृष्ठ का शेष

देख खिसक जाता, इसका आकलन कठिन हो जाता।

अच्छे अस्पतालों में सारा दिन आपन लुंगी या पैंट धार तो आप बिस्तर पर रह नहीं सकते। ऐसी कोई अस्वस्थ्य परम्परा उपलब्ध नहीं है। कमरे या वार्ड की खिड़कियां खुली रहती हैं, दरवाजे बन्द नहीं होते। आसपास पलंगों या मरीज साथी लेटे या बैठे रहते हैं। उनका ध्यान हर हरकत पर रहता है। नर्सें कभी भी आ जा सकती हैं। चूंकि आप उन्हें सिस्टर कहते हैं अत: उनके सामने पाजामा उतारना और भी संकोच का कारक तथा भारतीय संस्कृति के विरूद्ध पड़ता है। क्या कीजियेगा। मैं तो ताक में घंटों बैठे रहता कि उचित क्षण मिले और मैं यह पाजामा उतार नया पहन लूँ। कविता लिखने वालों को जैसे निजी एकान्त चाहिए होता है ना। मिलता नहीं। शायद यही कारण है कि इस समय कविता में बदलावा सार्वजनिक अस्पताल में पाजामा बदलने की तरह मुश्किल हो रहा है।

बड़ी कठिनाई भरे दिन बीते। रोज एक भिन्न कथा होती, भिन्न ट्रिक होती। मित्र मिलने आते। और शरद जी हमारे योग्य कोई सेवा हो तो निस्संकोच बताइये। क्या बताता? थोड़ा रुकिये और मुड़े पाजामा बदलने में सहायता कीजिए। एक मित्र को मैंने व्यथा बताई। कहने लगा साहस से कर गुजरिये। उसके जाने के बाद मैं मन ही मन हँसने लगा। साहस से क्या जीवन में कर सका हूँ जो यहीं कर गुजरूँगा। फिर भी हो जाता, मैं कुछ कर लेता था। पाजामा सचमुच बदल लेने के बाद मैं पलंग पर बैठ चारों ओर गर्व से देखता। मैंने कर लिया। आय डिड इट।

जब अंग्रेज आए, सभ्यता रंग पकड़ने लगी, तब देशी महाराजाओं और नये रईसों के लिए 'हाउ टु वेअर ट्राइजर्स' जैसे समाजोपयोगी लेख छपने के बारे में कहते हैं। पाजामा बदलने पर चिन्तन नहीं हुआ। आत्मा की शान्ति के लिए कितना आवश्यक था। खैर। मैं बीस दिनों बीमार रहा। मेरे पास न अस्पताल का विकल्प था न पाजामे का।

अब मै। घर आ गया हूँ ओर पाजामा पहने यह लिख रहा हूँ। कहना अनुभव भरा समय बीता। बीत गया।

(साभार नवभारत टाइम्स नई दिल्ली, 2 जुलाई 1999/ प्रतिदिन/शरद जोशी)

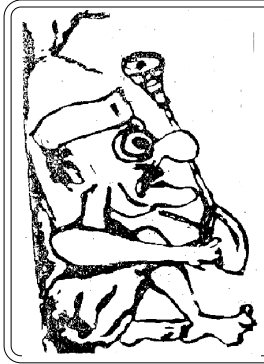

फसक

दाज्यू, कट-छंट कर बर्बादी ही होने वाली ठैरी

सर में पग्गड़ बांध हर कोई अलबेला बन रहा है बल

दाज्यू, पहलवानों का धरना और सांसद ब्रजभूषण की दनादन बयानबाजी के बाद हमें शहर वाले स्टेडियम की याद आ रही है। हरियाणा के पहलवान ब्रजभूषण पर आरोप लगा चुके हैं कि वह बालिकाओं के साथ गलत करता है। दाज्यू, भगवान जाने.....ब्रज और भूषण हम दो माने बैठे थे लेकिन पता चला है यह एक ही है। बड़ा नेता है। अब ये लोग भिड़ ही गये हैं तो क्या कहा जाए? कट-छंट कर बर्बादी ही होने वाली ठैरी।

अपने शहर वाले स्टेडियम में भी छम-छम होने वाली ठैरी। घोर कलजुग चल रहा है, कौन किसको क्या कह सकता है? युवाओं को हवा लगाने वाले राहू-केतु की तरह घूमते रहते हैं बल। गरम समोसे, चटनी, कुल्फी का स्वाद लग ही जाने वाला ठैरा। सड़क चलते कौन किसको अभिभावक बताने लगे यह भी डर है। हर सिर पर पगड़ी दिख रही है। बारातों में अंगूठी पहनाने की रश्म के बाद हल्दी का दंगल भी होने लगा है। सिर पर पगड़ी बांध हर कोई अलबेला बन रहा है बल। हमारे गाँव में ऐलान हो चुका है कि बारात-पार्टी में शराब नहीं परोसी जायेगी। लेकिन दाज्यू, नशा कई प्रकार का होने वाला हुआ। बुतका कह रहे थे- 'शराब की पार्टी आराम से निपट जाती थी। ज्यादातर पीकर तर हो जाते थे। अब पनीर टिक्का, मंचूयिन, मुरादाबादी दाल से लेकर आईसक्रीम गुलाबजामुन तक सजाने का रिवाज चल पड़ा है। बर्बादी अधिक होने लगी है। सर में पगड़ी होने के कारण किसी को टोक भी नहीं सकते हैं।'

पर्यटन मंत्री सतपाल महाराज कह चुके हैं- 'एप के जरिये लोग सड़कों के गड्ढों के बारे में बताएगी और सरकार उन्हें भर देगी।' दाज्यू, गड्ढे भरना ही तो कठिन हो गया है। सरकार इसमें सफल हो जाती है तो बड़ी उपलब्धि होगी। कबीना मंत्री प्रेमचन्द्र अग्रवाल को ही संभालना कठिन दिखाई दे रहा है बल। आंखिर कुछ तो दमखम होगा ही, तभी तो सड़क पर कुटाई-पिटाई का हंगामे के बाद भी वह सुर-ताल में दिखाई दे रहे हैं। उनपर पीटने का आरोप और वायरल वीडियो अपनी जगह है।

दाज्यू, सोशल मीडिया में अड़ंग-बड़ंग ठुसाठूस हो रही है। एक समाचार की कतरन डालते हुए प्रोफेसर खान बता रहे हैं- 'सरकारी सेक्टर में काम की कोई वैल्यू नहीं है। यहाँ काम न काने वाले गधे और बहुत अच्छा काम करने वाले लोग, दोनों को तय समय पर प्रमोशन मिल जाता है। लेकिन वे जीवन में एक ऊँचाई तक ही जा सकते हैं। निजी क्षेत्र में काम की वैल्यू है।' दाज्यू, प्राविधिक शिक्षा मंत्री सुबोध उनियाल ने राजकीय पॉलिटेक्निक पित्थूवाला में आयोजित रोजगार मेले के उद्घाट पर यह बात कही बल। पिथौरागढ़ छात्रसंघ पूर्व अध्यक्ष कमलेश वाल्दिया करोड़ों की धोखाधड़ी में अन्दर हो गया। दाज्यू, किस- किस को कहें, सब जल्दी में हैं।

-तुम्हारा भुली झकरुवा

अभिनव पहल

कैलास मानसरोवर नाम से अगरबत्ती-धूप

व्यास घाटी की महिला स्वयं सहायता समूहों से हुआ सम्वाद

धारचूला। कैलाश मानसरोवर की भूमि में स्थित व्यास घाटी के महिला स्वयं सहायता समूहों की महिलाओं को लोकल उत्पादों से अगरबत्ती, धूप तथा मोमबत्ती बनाने का प्रशिक्षण दिया जाएगा। इसके लिए स्वयं सहायता समूहों से जुड़ी महिलाओं के साथ जिला पंचायत सदस्य जगत मर्तोलिया ने सम्वाद स्थापित किया। उन्होंने कहा कि 'कैलास मानसरोवर' के नाम से अगरबत्ती, धूप तथा मोमबत्ती को बाजार में लांच किया जाएगा।

विकास खण्ड सभागार में आयोजित एक दिवसीय सम्वाद में व्यास घाटी के सात ग्राम पंचायतों की महिला स्वयं सहायता समूहों की महिलाओं ने भाग लिया।

उत्तराखण्ड बहुउद्देशीय वित्त एवं विकास निगम देहरादून द्वारा सोसायटी फार एक्सन इन हिमालया पिथौरागढ़ के माध्यम से इस प्रशिक्षण को आयोजित किए जाने की योजना है। ब्लाक सभागार में आयोजित सम्वाद में जिपंस जगत मर्तोलिया ने बताया कि हिमालय क्षेत्र के स्थानीय कच्चे माल से अगरबत्ती, धूप बनाया जाएगा। इसके लिए महिलाओं को एक माह का प्रशिक्षण देकर प्रशिक्षित किया जाएगा। उसके बाद इन हिमालय क्षेत्र की महिलाओं के हाथों से बने अगरबत्ती एवं धूप को बाजार में लाकर स्वरोजगार के नये आयाम स्थापित किए जा सकते है। उन्होंने कहा विकास खण्ड धारचूला के 6 न्याय पंचायतों में एक न्याय पंचायत एक उत्पाद तथा एक गाँव एक उत्पाद के लिए विशेष सर्वे अभियान भी चलाया जा रहा है।

बैठक में विकास खण्ड के एनआरएलएम के एरिया कोडिनेटर खजान सिंह जंगपांगी, समूहों से रजनी देवी, कवियत्री देवी, अरुणा गुंज्याल, कला, पर्मिला गर्ब्याल, अंजलि देवी, नीमा नबियाल, कुसुम देवी, मुन्नी परिहार, लक्ष्मी देवी, रैबिना देवी आदि मौजूद रहे।

'कैलास द्वार' नाम से जूट बैग भी लांच होगा

धारचूला। नगर की अल्पसंख्यक समुदाय की महिला स्वयं सहायता समूहों से जुड़ी महिलाएं जूट बैग मैकिंग का कौशल सीखकर हुनर की दुनिया में कदम रखेंगी। 'कैलास द्वार' के नाम से जूट बैग को बाजार में बिक्री हेतु उतारा जाएगा। इसको लेकर अल्पसंख्यक समुदाय की महिलाओं के बीच मंथन हुआ।

उत्तराखण्ड अल्पसंख्यक कल्याण एवं वक बोर्ड देहरादून द्वारा मुख्यमंत्री हुनर योजना के तहत नेपाल तथा चीन सीमा से लगे कैलास द्वार के नाम से विख्यात धारचूला नगर में रहने वाले अल्पसंख्यक समुदाय की महिलाओं को स्वरोजगार से जोड़ने के लिए 45 दिवसीय प्रशिक्षण आयोजित किया जा रहा है। इसके संचालन की जिम्मेदारी सोसायटी फॉर एक्सन इन हिमालया पिथौरागढ़ को दी गई है।

नगर पालिका सभागार में आयोजित एक दिवसीय सम्वाद में जिपंस जगत मर्तोलिया ने अल्पसंख्यक समुदाय की महिला स्वयं सहायता समूहों से जुड़ी महिलाओं के साथ इस विषय पर बात करते हुए कहा सिंगल यूज प्लास्टिक का प्रयोग कम होने से जूट बैगों का बाजार में महत्व बढ़ गया है। नगर की अल्पसंख्यक समुदाय की महिला स्वयं सहायता समूहों से जुड़ी महिलाएं जूट बैग मैकिंग का कौशल सीखकर हुनर की दुनिया में कदम रखेंगी।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

जागरूकता

भूस्खलन की चेतावनी देने वाले संकेतों के प्रति जागरूक होना जरूरी

डॉ.हरीश चन्द्र अन्डोला

भारत में भूस्खलन का पूर्वानुमान लगाने के लिए आवश्यक परिष्कृत चेतावनी तंत्र का अभाव है। इस वजह से देश में यह समस्या और जटिल हो जाती है। भूस्खलन के लिए सम्वेदनशील माने जाने वाले देश के किसी भी हिस्से को ले लें, हर जगह जल निकासी के इन्तजाम खस्ताहाल हैं। इससे जान-माल की क्षति का खतरा और बढ़ जाता है। भारी बरसात की वजह से भूस्खलन होते हैं। मानवजनित निर्माण कार्यों के कारण इसकी आशंका काफी बढ़ जाती है। खेती या किसी अन्य कार्य के लिए पहाड़ी सतह को समतल करने के लिए इस्तेमाल होने वाली भारी मशीनें भी चट्टानों के खिसकने का कारण बनती हैं। सरकार ने ऐसे क्षेत्रों की पहचान की है जहाँ बार-बार भूस्खलन होते हैं। उनका नक्शा भी खींचा गया है। राष्ट्रीय आपदा प्रबन्धन प्राधिकरण ने भूस्खलन और बर्फ की चट्टानों के खिसकने की घटनाओं के प्रबन्धन से जुड़े विस्तृत दिशा-निर्देश बनाए हैं, ताकि इन आपदाओं की विनाशक क्षमता को नियंत्रित किया जा सके।

भूस्खलन के जोखिम को कम करने वाले उपायों को संस्थागत रूप देने की कोशिश हो रही है, जिससे इस प्राकृतिक आपदा से होने वाली क्षति को कम किया जा सके। भूस्खलन रोकने के लिए आवश्यक कार्यों को समयबद्ध तरीके से पूरा करने के लिए कई उपाय बताए गए हैं। इसमें कुछ को तो रोजाना तौर पर आजमाने की बात कही गई है। मसलन तूफानी बारिश के पानी को ढलानों से दूर रखा जाए। नालियों की नियमित तौर पर सफाई करके उनमें से प्लास्टिक, वृक्षों के पत्ते और दूसरे कचरे निकाले जाएं। भूस्खलन की चेतावनी देने वाले संकेतों के प्रति जागरूक और सतर्क समाज इस चुनौती से निपटने में अहम योगदान कर सकता है। इनके अलावा ज्यादा से ज्यादा पौधारोपण जिनकी जड़ें मिट्टी की पकड़ को मजबूत बनाती हैं, चटानों के गिरने के सर्वाधिक सम्भावित क्षेत्रों की पहचान और चट्टानों में आने वाली दरारों की निगरानी जैसे उपाय भी बड़े कारगर साबित हो सकते हैं। ऊपरी हिस्से में कहीं भूस्खलन हुआ है। किसी भी ढलान के उस समतल हिस्से पर जहाँ बहाव के वेग को कम किया जा सकता है, उसे सुरक्षित रखना चाहिए और जब तक नए पौध रोपण की तैयारी पूरी न हो चुकी हो तब तक पेड़ों की कटाई नहीं होनी चाहिए। भूस्खलन के प्रबन्धन के लिए सभी सम्बन्धित पक्षों के बीच एक समन्वित और बहुआयामी नजरिए की जरूरत होती है जिसे आवश्यक जानकारी और संस्थागत एवं वित्तीय सहायता मुहैया कराकर कारगर बनाया जा सकता है। नैनीताल शहर के विकास, संरक्षण और भावी योजनाओं को लेकर बनाए जा रहे मास्टर प्लान में बलियानाला सर्वाधिक सम्वेदनशील मुद्दा रहेगा। देश के नामी संस्थानों और विदेशी विशेषज्ञों के चार दिनी सर्वे और अध्ययनों में यहीं तथ्य सामने आए हैं। अध्ययन में पता चला है कि पहाड़ी पर हर पल हलचल हो रही है। ऐसे में वर्षा के दौरान पहाड़ी पर भूस्खलन की समस्या बनी रहेगी। विशेषज्ञों का मानना है कि भविष्य में बलियानाला का भूस्खलन शहर के अस्तित्व के लिए बड़ा संकट बन सकता है। इसलिए पहाड़ी का जल्द ट्रीटमेंट बेहद जरूरी है।

एडीबी वित्त पोषण से क्लाइमेट रेसिलियेंस सस्टेनेबल डेवलपमेंट ार नैनीताल प्रोजेक्ट का क्रियान्वयन किया जा रहा है। जिसमें नैनीताल की भावी जरूरतों, समस्याओं और समाधानों का अध्ययन कर मास्टर प्लान तैयार किया जाना है। जिससे 20 वर्ष बाद शहर आने वाली चुनौतियों से निपटा जा सके। देश और विदेशी विशेषज्ञों ने अध्ययनों के बाद बलियानाला में हो रहे भूस्खलन को ही सर्वाधिक संवेदनशील विषय बताया है। टीम के सदस्यों ने बताया कि बलियानाला क्षेत्रीय नहीं, बल्कि राष्ट्रीय स्तर का मुद्दा है, जिसका सीधा कनेक्शन नैनीताल के अस्तित्व से है। पहाड़ी के कई स्तरों पर कई विशेषज्ञ अध्ययन कर चुके हैं। मगर हर बार अधययनों में नए तथ्य सामने आ रहे हैं। यह तथ्य शहर के लोगों की चिंता बढ़ाने वाले हैं। बलियानाला पहाड़ी का अध्ययन किया। टीम विशेषज्ञ ने बताया कि दो दिनों तक स्कैनर से हर आधो घंटे में पहाड़ी का स्कैन लिया गया। जिसमें सामने आया कि पहाड़ी में हर पल हलचल हो रही है। बिना वर्षा के पहाड़ी से मिट्टी और धूल के कण गिर रहे हैं। वर्षा के पानी का पहाड़ी से रिसाव हुआ तो भविष्य में यह बड़ा खतरा बन सकता है। ऐसे में समय रहते प्रबन्धन बेहद जरूरी है। बलियानाला पहाड़ी में रिस्क मैनेजमेंट सॉल्यूशन इण्डिया व नीदरलैंड से पहुँचे विशेषज्ञों ने वाटर क्वालिटी, भूमिगत जल और अन्य पहलुओं का अध्ययन किया। विशेषज्ञ शफीक ने बताया कि पहाड़ी से भारी मात्रा में पानी का रिसाव हो रहा है, जोकि भूमिगत जल प्रतीत हो रहा है। लगातार पानी के रिसाव से पहाड़ी कमजोर हो रही है, जिसका समय रहते प्रबन्धन बेहद जरूरी है शहर के सबसे सम्वेदनशील मुद्दे को लेकर नौकरशाहों गम्भीर नहीं दिखती। हर वर्ष पहाड़ी पर भूस्खलन होता है। जिसके ट्रीटमेंट के लिए कई बार सर्वे और अध्ययन हो चुके हैं। मगर अब तक ट्रीटमेंट शुरू करने को बजट नहीं मिल सका। करीब डेढ़ वर्ष के अध्ययनों के बाद बीते वर्ष दिसम्बर में जेंट्स टू कंसल्टेंट कम्पनी की ओर से बनाई गई डीपीआर को हाई पावर कमेटी के बाद मुख्य सचिव के समक्ष रखा गया। मुख्य सचिव ने प्रोजेक्ट को वित्तीय स्वीकृति देते हुए जल्द कार्य भी शुरू करने के निर्देश दिए। मगर चार माह गुजरने के बाद भी बजट जारी नहीं हो सका है।

पर्वतीय क्षेत्रों में निर्माण कार्य और भारी बारिश से भूस्खलन की घटनाएं हर साल बढ़ती जा रही हैं। इससे जानमाल का काफी नुकसान होता है। साथ ही रेल सेवाएं अवरुद्ध हो जाती हैं। हाईवे समेत कई सड़क मार्ग अवरुद्ध हो जाते हैं। इससे सबसे अधिक नुकसान विकासशील देशों में हो रहा है।

(लेखक दून विवि में कार्यरत हैं।)

ज्योतिष की बातें - 127

इस सप्ताह चन्द्रमा के अतिरिक्त अन्य किसी भी ग्रह का राशि परिवर्तन नहीं होगा। सम्पूर्ण सप्ताह शनि मूलत्रिकोण राशि कुम्भ में, गुरु मित्रराशि मेष में, शुक्र मित्रराशि मिथुन में, बुध समराशि मेष में, सूर्य शत्रुराशि वृषभ में, मंगल नीचराशि कर्क में गोचररत रहेंगे। राहु इस समय शत्रुराशि मेष में गोचररत है। चन्द्रमा इस सप्ताह मित्रराशि मिथुन, स्वराशि कर्क व मित्रराशि सिंह में क्रमशः गोचर करेगा। विशेष बात यह है कि इस समय सभी पंचतारा ग्रह मार्गी व उदित अवस्था में हैं।

प्रायः लोगों का कहना होता है कि साप्ताहिक भविष्य अथवा दैनिक, वार्षिक भविष्य पूर्णतः सही नहीं निकलता है। इसका कारण यह होता है कि यहाँ पर साप्ताहिक भविष्यफल का आंकलन जातक की केवल चन्द्रराशि के आधार पर किया जाता है । यह स्थूल रूप से ही सही होता है, जबकि व्यक्ति विशेष के लिए सूक्ष्म विश्लेषण उसकी लग्नकुण्डली, नवमांश कुण्डली, महादशा, अन्तर्दशा आदि बातों पर निर्भर करता है।

शुभं भवतु !!

-ओंकार नाथ कोष्टा
ज्योतिर्विद् एवं आयुर्विद

सम्यक विचार- 18

समान कानून का औचित्य

हर जाति की परम्पराएँ अलग-अलग होती हैं। उनके रीति-रिवाज अलग-अलग होते हैं, कहीं-कहीं बोली भी अलग होती है। धार्मिक मान्यताएँ अलग-अलग होती हैं, विवाह आदि संस्कार करने के तरीके भी अलग-अलग होते हैं। इसी प्रकार विभिन्न स्थानों, राज्यों अंचलों की भी परम्पराएँ, रीति-रिवाज, संस्कार, धार्मिक मान्यताएँ अलग-अलग होती हैं। उसी प्रकार विभिन्न सम्प्रदायों में भी, विभिन्न पन्थों में भी भिन्न-भिन्न परम्पराएँ, मान्यताएँ पाई जाती हैं। सभी की रीति-रिवाजों को कोई कानून बनाकर एक समान किया जाना सम्भव नहीं है और यह उचित भी नहीं है क्योंकि विविधता में ही रोचकता होती है, एकरूपता तो नीरस हो जाती है ।

सरकार को किसी भी वर्ग की रीति-रिवाजों, परम्पराओं में हस्तक्षेप नहीं करना चाहिये। यह हस्तक्षेप तभी करना चाहिए जब एक जाति के रीति-रिवाज दूसरी जाति की लोगों को बाधा पहुँचाते हों, एक राज्य के लोगों की मान्यताएँ, परम्पराएँ आदि दूसरे राज्य के लोगों को बाधा पहुँचाती हों, किसी पन्थ विशेष की धार्मिक मान्यताएँ, संस्कार आदि दूसरे पन्थ के लोगों को उनकी अपनी परम्पराओं के पालन करने में व्यवधान उत्पन्न करते हों। अन्यथा किसी की भी रीति-रिवाजों, व्यक्तिगत परम्पराओं में हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए ।

-सरल

गुंजी में संचार तंत्र मजबूत होगा

धारचूला। चीन सीमा से लगे गुंजी में संचार तंत्र मजबूत होगा। यहाँ मोबाइल टावर लगाने का काम शुरु हो गया है। एक माह के भीतर जियो की मोबाइल सेवा शुरु होने की उम्मीद है। दारमा घाटी के तिदांग में मोबाइल सेवा पिछले साल शुरू हो गई थी। इसके अलावा बालिंग और बोन में टावर लगाए जा चुके हैं। व्यास घाटी में अभी मोबाइल सेवा नहीं है। गुंजी में हाल में वाईफाई सेवा संचालित की गई है लेकिन इसका दायरा सीमित है। अब टावर लगने से यह सुविधा बढ़ेगी।

पिघलता हिमालय के सम्मानित सदस्य-

मिशन की पत्रकारिता चुनौतीपूर्ण कार्य है। ऐसे में अपने सम्मानित सदस्यों से निवेदन है कि अधिकाधिक सहयोग करेगे। पिघलता हिमालय की नाममात्र के लिये वार्षिक सदस्यता 200/- आजीवन सदस्यता- 2000/- है। इसके अतिरिक्त अपने सन्देश/विज्ञापन के रूप में सहयोग दिया जा सकता है। सहयोग राशि सीधे बैंक में भेजने वाले राशि जमा करते ही उसकी सूचना हमारे मो0न0 पर भी दें ताकि मान्य हो सके।

स्थानान्तरण होने की स्थिति में सदस्यगण अपना पता बदलने की सूचना भी समय से दें।

खाते का नाम- पिघलता हिमालय

बैंक का नाम- बैंक ऑफ इण्डिया

शाखा कार्यालय कालाढूंगी रोड, हल्द्वानी(नैनीताल)

खाता नं- 705120110000225

IFSC कोड नं- BKID 0007051

(05946)264013, 9458961490, 9411770280, 9411301014, 9410713075

रेस जिन्दगी की

बदहस्त बेहाल था मैं जब तक
जिन्दगी जीने का मजा था तब तक
खनकते सिक्कों का ना जोर था
छोटी-छोटी बातों में कहकहों का शोर था
टूटी खाट में नींद का अलग ही आनन्द था
मखमली गद्दों में नहीं आती यह रंज था
खनकते सिक्कों की दौड़ में जो पड़ गये
सूखे पत्तों की तरह शाख से झड़ गये।
अब न कहकहे हैं ना शोर है
बड़ा आदमी बनाने पर ही जोर है
बड़ा आदमी तो बना पर इन्सान छोटा हो गया
अपना स्वार्थ, मैं, मेरा करने में कहीं खो गया
सच्ची खुशियाँ ना जाने कहाँ खो गयी
खोखली सी जिन्दगी और हंसी हो गयी।
कहाँ थे कहाँ आ गये हम
सब पीछे छूटा अब अकेले हैं हम
काश वक्त को रोक पाते हम
हाय, रहेगा अब यह गम
काश वक्त को रोक पाते हम।

-रेनू कपूर

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

कौशल, क्षमता, मूल्य संवर्धन पाठ्यक्रम जरूरी

हल्द्वानी। नई शिक्षा नीति के तहत हो रहे बदलाव को छात्र-छात्राओं को समझ जाना चाहिये। नये सत्र से किस प्रकार की पढ़ाई होगी और अपने प्रवेश/परीक्षा फार्म में किस प्रकार से विषय लिखे जाएं इसके लिये जागरुक रहें।

उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय ने भी स्नातक के छात्रों को नए शिक्षा सत्र में परम्परागत विषयों के साथ ही अनिवार्य पाठ्यक्रम अपनाने को कह दिया है।

इसके तहत कौशल वृद्धि कोर्स में- उद्यमशीलता, बाल विकास, खाद्य सुरक्षा एवं गुणवत्ता नियन्त्रण, योग का परिचय, मानव शरीर रचना एवं स्वास्थ्य, सूचना के अधिकार का आवेदन, जैविक खेती का परिचय, कौशल एवं व्यक्तित्व विकास, बुनियादी कम्प्यूटर कौशल और इंटरनेट समेत 26 विषय शामिल हैं।

मूल्य सम्वर्धन कोर्स में- वैदिक स्टडीज, भारतीय शास्त्र के प्रबन्धकीय अध्याय, मानव मूल्य एवं नीतिशास्त्र, आधुनिक भारतीय विचारक, सामुदायिक विकास, तनाव प्रबन्धन, संवैधानिक मूल्य एवं मौलिक कर्तव्य, भारतीय विज्ञान एवं तकनीक शामिल हैं। क्षमता वृद्धि कोर्स में- इंग्लिश, हिन्दी, संस्कृत, कुमाउंनी, गढ़वाली, जापानी, नेपाली और उर्दू में से किसी एक भाषा का चुनाव करना है।

रामनगर नगरपालिका सीमा विस्तार की खिलाफत

रामनगर। नगर पालिका द्वारा प्रस्तावित सीमा विस्तार के ऐलान को ग्रामीणों द्वारा तुगलकी फरमान बताते हुए प्रदर्शन किया गया। ग्रामीण क्षेत्र के 5 गाँवों को नगर पालिका सीमा क्षेत्र में शामिल किए जाने के प्रस्ताव का विरोध करते हुए ग्रामीणों ने जन अधिकार संगठन के बैनर तले जुलूस निकालकर नगर पालिका परिषद में प्रदर्शन किया।

आन्दोलनकारियों ने शिवलालपुर, रिंयूनयि, चोरपानी, गौजानी व कानिया गाँव को नगर पालिका में शामिल करने के प्रस्ताव को तैयार करने के लिये जिम्मेदार अधिशासी अधिकारी का घेराव कर जिलाधिकारी व मुख्यमंत्री को ज्ञापन प्रेषित किया।

प्रदर्शन कर रहे लोगों ने सभा को सम्बोधित करते हुए कहा कि वोट बैंक की घृणित राजनीति के लिये सरकार ग्रामीणों पर नगर पालिका थोप रही है। नगर पालिका क्षेत्र में शामिल करने के बाद ग्रामीणों पर भवन कर सहित अन्य टैक्सों को दबाव होगा। मनरेगा जैसी योजनाओं से भी ग्रामीण वंचित हो जायेंगे। ग्रामीणों ने कहा कि नगर पालिका क्षेत्र का कूड़ा हमारी सिंचाई नगर में डालकर पानी को प्रदूषित किया जा रहा है। संयोजक आनन्द नेगी ने कहा कि यदि नगर पालिका अपनी सीमा का विस्तार ही चाहती है तो इसमें शामिल किये जाने वाले क्षेत्र में रायशुमारी की जानी चाहिये। अधिशासी अधिकारी ने ज्ञापन लेते हुए आश्वस्त किया कि इसे डीएम को प्रेषित करेंगे और ग्रामीणों से रायशुमारी होगी।

दूसरी ओर पालिका सीमा में शामिल करने की मांग को लेकर दूसरा पक्ष सक्रिय है। कार्बेट नगर को रामनगर नगर पालिका में शामिल करने की मांग को लेकर ज्ञापन प्रेषित किया गया। इस मौके पर कार्बेट नगर के लोग उपस्थित थे।

किच्छा व रुद्रपुर में अतिक्रमण हटाओ अभियान

रुद्रपुर। महानगर रुद्रपुर व किच्छा में अतिक्रमण हटाओ अभियान जोरों पर है। राष्ट्रीय राजमार्गों को अतिक्रमण मुक्त बनाने के लिए पुलिस ने हाईवे किनारे तमाम अतिक्रमणों को चिन्हित कर नोटिस जारी किये और टीमों ने नैनीताल हाईवे, काशीपुर हाईवे, हल्द्वानी हाईवे, नैनीताल दिल्ली राष्ट्रीय राजमार्ग पर हाईवे किनारे इन्हें हटाया जा रहा है। रामनगर में जी-20 की तैयारियों के समय ही रुद्रपुर में अतिक्रमण हटाने की मुहिम चल पड़ी थी और बार-बार चेतावनी भी दी जाती रही है।

दूसरी ओर किच्छा में हाईवे से अतिक्रमण हटाने पर हंगामा मचाने वालों को पुलिस ने हटाया। राष्ट्रीय राजमार्ग किनारे किए गए अतिक्रमण के खिलाफ अभियान चलाते हुए प्रशासन की संयुक्त टीम ने हटाये। नगर के अम्बेडकर चौक पर ठेला, फड़, खोखा के अतिक्रमणों को हटाते समय कुछ लोग हंगामा करने लगे, जिन्हें पुलिस ने लाठियां फटकारते हुए दूर किया। अतिक्रमण हटाओ अभियान में पुलिस के साथ राजस्व विभाग, चकबन्दी विभाग, नगर पालिका प्रशासन की टीम थी।

इसी प्रकार जसपुर में भी अभियान चलाया गया। निवारमुंडी गाँव में विद्यालय की भूमि पर अतिक्रमण हटाने की मांग भी उठी है। क्षेत्रवासियों ने एसडीएम कार्यालय में प्रदर्शन करते हुए अतिक्रमण हटाने की मांग की।

आदि कैलास यात्रियों के दलों का आना-जाना

पिथौरागढ़। यात्रा सीजन शुरु होते ही पहाड़ में धार्मिक और पर्यटन यात्राओं का जोर है। इसी क्रम में प्रसिद्ध आदि कैलास यात्रियों के दलों का आना-जाना जारी है।

आदि कैलास की यात्रा पर निकले दो यात्री दल लौट चुके हैं लेकिन इन्हें बिना दर्शन के लौटना पड़ा। मौसम के कारण यात्रियों को आदि कैलास के दर्शन नहीं हो सके।

कुमाऊँ मण्डल विकास की ओर से संचालित आदि कैलास यात्रा के लिये निकले शुरुआती यात्री दल यात्रा पड़ाव होते हुए पिथौरागढ़ के बाद धारचूला और गुंजी पहुँचे। नाभीढांग स्थित ओम पर्वत के दर्शन के बाद यात्री कुटी गये लेकिन मार्ग में कई जगह ग्लेशियर आने की वजह से आदि कैलास दर्शन की इच्छा पूरी न हो सकी। ज्योलिकांग सड़क नहीं खोले जाने से भी यात्रियों व स्थानीय लोगों को परेशानी का सामना करना पड़ज़ है। इन यात्रियों ने नारायण आश्रम भ्रमण और रात्रि विश्राम के बाद चौकोड़ी में रुके।

कुर्मांचिनि के पिथौरागढ़ पर्यटक आवास गृह में तीसरे दल के यात्रियों ने आवास गृह के प्रबन्धक दिनेश गुरुरानी के साथ हिमालय बचाओ अभियान की शपथ के साथ मानसरोवर यात्री वाटिका में पौध रोपण किया। यात्रियों को कालापनी मन्दिर परिसर में रोपण के लिये पौधे दिये गये।

केएमवीएन के जीएम एपी वाजपेयी के अनुसार कुटी के आगे मार्ग बन्द होने से यात्रियों को आदि कैलास के दर्शन नहीं हुए थे। यात्रा क्रम में कोई बदलाव नहीं किया गया है। तय कार्यक्रम के अनुसार यात्रा जारी रहेगी। जिलाधिकारी पिथौरागढ़ से अनुरोध किया गया है कि मार्ग खुलवाने में मदद करें। आगे के यात्री दलों को दर्शन हो पायेंगे।

रीठा सोपस्टोन माइन को प्रदेश में प्रथम स्थान

बेरीनाग/हल्द्वानी। समुदाय आधारित उत्कृष्ट खनन में रीठा सोपस्टोन माइन ने लगातार दूसरी बार प्रदेश स्तर पर प्रथम पुरस्कार प्राप्त किया है।

इस बार उत्तराखण्ड के खान सुरक्षा सप्ताह कार्यक्रम के समापन अवसर पर हल्द्वानी में कम्पनी को कई पुरस्कार मिले। पुरस्कार प्राप्त करने के बाद गाँव पहुँची कम्पनी की टीम का ग्रामीणों व खनन मजदूरों ने भव्य स्वागत किया।

कम्पनी को राज्य स्तर में उत्कृष्ट खनन के प्रथम पुरस्कार के अतिरिक्त माइन वर्किंग व पब्लिसिटी एण्ड प्रपेगंडा वर्गों में प्रथम तथा माइन बेलफेयर में दूसरा स्थान मिला। इस बाद कार्यक्रम में प्रदेश की 84 सोपस्टोन व मैग्नेसाइट खदानों ने भागीदारी की थी। खान सुरक्षा महानिदेशालय की टीमें ने सभी खदानों का निरीक्षण किया। आयोजन की जिम्मेदारी भी रीठा सोपस्टोन माइन की थी। कम्पनी के प्रबन्ध निदेशक सुधीर राठौर ने बताया कि कार्यक्रम के सफल आयोजन एवं कम्पनी के कार्यों को सभी ने सराहा।

समारोह में खान सुरक्षा महानिदेशालय के महानिदेशक व परिजन सहित गणमान्य जन उपस्थित थे। महानिदेशक प्रभात कुमार ने अपने सम्बोधन में कहा कि पहाड़ी क्षेत्र होने के कारण उत्तराखण्ड खनन में अग्रणीय नहीं है परन्तु खनन से जुड़े बन्धुओं ने खनन नियमों के साथ जिस प्रकार की सेवा की है वह सराहनीय है। इस अवसर पर श्री चिदरवाल, राम अवतार मीणा, संदीप श्रीवास्तव, योगेश शर्मा ने भी खनन कार्यों को सराहा। बताते चलें कि रीठा सोपस्टोन माइन की शुरुआत से ही क्षेत्र के विकास पर ध्यान दिया गया है

रानीखेत में छावनी से अलग रहने को प्रदर्शन जारी

रानीखेत। सुरम्य नगरी रानीखेत पिछले दो महीने से लगातार प्रदर्शन कर सुलगी हुई है। क्षेत्रवासियों ने साफ कह दिया है कि विकास के लिये अब वह छावनी से अलग रहना चाहते हैं।

छावनी से नागरिक क्षेत्र को पृथक कर रानीखेत-चिलियानौला नगर पालिका परिषद में शामिल करने की मांग को लेकर रानीखेत विकास संघर्ष समिति का धरना व प्रदर्शन जारी है। धरना स्थल पर हुई सभा में संघर्ष समिति ने जिलाधिकारी अल्मोड़ा वन्दना सिंह और सेना अधिकारियों को गोल्फ कोर्स और झूलादेवी-चौबटिया मार्ग खुलवाने के लिए धन्यवाद व्यक्त किया। साथ ही बैठक में लोगों से आन्दोलन में सहभागिता कर एकजुट संघर्ष करने की अपील की। वक्ताओं ने कहा कि कैंट बहिष्कार को लेकर आन्दोलन जारी रहेगा।

आन्दोलनकारियों के शिष्ट मण्डल ने रक्षा राज्यमंत्री अजय भट्ट को ज्ञापन सौंपते हुए रानीखेत के विकास के लिये छावनी से अलग कर नगर पालिका को विस्तारित करने की मांग की। इस अवसर पर जयन्त रौतेला, दीप भगत, राजेन्द्र अग्रवाल, गिरीश भगत, अगस्त शाह, उमेश भट्ट, नेहा मेहरा, गीता पंवार, कैलाश पाण्डे सहित तमाम लोग थे।

परिक्रमा

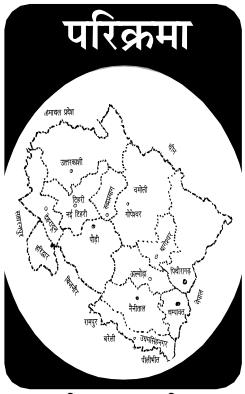

जागेश्वर बनेगा पांचवा धाम

अल्मोड़ा। कल्याणिका डोल आश्रम के वार्षिकोत्सव में पधारे सीएम पुष्कर सिंह धामी ने कहा कि जागेश्वर धाम को पांचवे धाम के रूप में विकसित किया जायेगा। इसके लिये प्रधानमंत्री से अनुरोध किया गया है। शासन का जो मानसखण्ड मन्दिरमाला मिशन का मास्टर प्लान है, वह पूर्णरूप से तैयार है और उसकी शुरुआत जागेश्वर धाम से की जाएगी।

जगदीशशिला डोली का भ्रमण

हल्द्वानी। भगवान विश्वनाथ जगदीशिला डोली का भ्रमण जारी है। पूर्व कबीना मंत्री मंत्रीप्रसाद नैथानी बीते 23 वर्षों से यह डोली निकाल रहे हैं। हरिद्वार से शुरु होकर राज्य के 13 जिलों में इसका भ्रमण होता है। विश्व शान्ति की कामना के साथ यात्रा पर निकली डोली का जगह-जगह स्वागत किया गया।

मथुरादत्त मठपाल की द्वितीय पुण्यतिथि

रामनगर। साहित्य अकादमी पुस्कार प्राप्त कुमाउंनी साहित्यकार मथुरादत्त मठपाल की द्वितीय पुण्यतिथि पर चार दिवसीय आयोजन किया गया। संयोजक प्रोफेसर गिरीश पन्त की पहल पर पर्वतीय सभा लखनपुर, महाविद्यालय में कार्यक्रम सहित ऑनलाइन संगोष्ठी भी हुई, जिसमें लोगों ने स्व.मठपाल के योगदान को याद किया।

टैगोर के शिक्षा दर्शन की झलक

नैनीताल। शान्ति निकेतन ट्रस्ट फॉर हिमालया की ओर से रामगढ़ में रवीन्द्रनाथ टैगोर जन्मोत्सव का आयोजन किया गया। विधायक रामसिंह कैड़ा ने कार्यक्रम का शुभारम्भ किया। आयोजक सचिव प्रो. अतुल जोशी ने कहा कि शिक्षा नीति 2000 में काफी हद तक गुरुदेव रवीन्द्रनाथ के शिक्षा दर्शन की झलक मिलती है।

एसएसजे विवि का परिसर चम्पावत

चम्पावत। राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय को एसएसजे विवि अल्मोड़ा के कैम्पस का दर्जा मिलने के बाद क्षेत्र में उत्साह है। राज्यपाल की मंजूरी के बाद इसकी अधिसूचना जारी हुई। सीएम ने अप्रेल 2022 में इसकी घोषणा की थी।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

68वां मुनस्यारी खेलोत्सव की तैयारी

मुनस्यारी। जोहार क्लब मुनस्यारी खेलोत्सव का आयोजन पहली जून से आरम्भ हो जायेगा। 68वें आयोजन को लेकर तैयारी होने लगी है। उल्लेखनीय है कि जोहार क्लब की ओर से ग्रीष्मोत्सव में होने वाले आयोजन को लेकर खेल प्रेमियों सहित सभी में हमेशा से उत्साह रहा है और जोहार क्लब का अपना इतिहास बहुत रचनात्मक है।

सचिव गौरव पांगती ने बताया है कि फुटबाल सहित अन्य प्रतियोगिताओं के लिये टीमों का नामांकन किया जा रहा है। खेलोत्सव के तहत फुटबाल (सीनियर वर्ग, अण्डर-14 वर्ग व बालक वर्ग व बालिका वर्ग), बालीबाल, कैरम, शतरंज, टेबल टेनिस, बैडमिंटन (बालक व बालिका), बाक्सिंग (बालक व बालिका वर्ग), मैराथन (बालक व बालिका वर्ग) प्रतियोगिता का आयोजन किया जायेगा। फुटबाल प्रतियोगिता हेतु प्रतिभागी टीम अपनी प्रविष्टि 27 मई की सायं 4 बजे तक करवा सकती हैं। मैच ड्रा 30 मई को अपरान्ह 3 बजे होगा।

मैराथन व बाक्सिंग वर्गों में प्रविष्टि 6 जून तक होंगी। अन्य खेलों की प्रविष्टि 9 जून तक हो सकेंगी। श्री पांगती ने बताया कि फुटबाल व बालीबाल प्रतियोगिता में प्रत्येक टीम को अपने पूरे किट में प्रतिभाग करना होगा। टीम मैनेजर को प्रत्येक खिलाड़ी का आधारकार्ड की छायाप्रति नवीनतम पासपोर्ट साइज फोटो क्लब कार्यालय में जमा करना होगा।

ओकलैंड स्कूल ने लहराया परचम

लोहाघाट। ओकलैंड पब्लिक स्कूल ने इस बार फिर से परचम लहराया है। शिक्षा के मिशन में अग्रणीय इस विद्यालय के प्रबन्धक स्वयं ही बच्चों के साथ अथाह मेहनत करते हैं। ऐसे में स्कूल के 5 छात्रों ने जेईई मेंस और छात्र ने एनडीए की परीक्षा उत्तीर्ण की है। स्कूल प्रबन्धक लोकेश पाण्डे और प्रधानाचार्य राहुल जोशी ने बताया कि अंकित खर्कवाल, नवनीत पन्त, जयेश पाण्डे, मानस वर्मा, मलय टम्टा ने जेईई मेंस की परीक्षा और योगिता यर्थोली ने एनडीए की लिखित परीक्षा उत्तीर्ण की है। विद्यालय परिवार के साथ सफल विद्यार्थियों को बधाई।

बताते चलें कि अपने विद्यार्थियों के साथ जुनून के साथ जुटने वाले विद्यालयों में ओकलैंड लोहाघाट की गणना भी होती है।

बाल प्रहरी संस्थान का आयोजन

बाल साहित्य और सामाजिक सरोकार

हरिद्वार। अल्मोड़ा से प्रकाशित बच्चों की पत्रिका बालप्रहरी, बाल साहित्य संस्थान अल्मोड़ा द्वारा राजकीय बालिका इण्टर कालेज ज्वालापुर, हरिद्वार में 'बालसाहित्य और सामाजिक सरोकार' विषय पर जन सहयोग से आयोजित संगोष्ठी को सम्बोधित करते हुए उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय हरिद्वार के डा. प्रकाश पन्त ने कहा कि एक दौर में बच्चे दादा व नानी की कहानियां सुनकर खुश होते थे। ये कहानियां मनोरंजन के साथ ही बच्चों में संस्कार भी जाग्रत करती थी। संयुक्त परिवारों के विघटन के बाद आज बच्चों को माता-पिता व दादा दादी से प्राकृतिक प्यार नहीं मिल रहा है। मोबाइल फोन की बढ़ती संस्कृति से बच्चे अब वीडियो गेम में मार-काट व हिंसक खेल सीख रहे हैं। उन्होंने कहा कि बच्चों के लिए ऐसा साहित्य लिखा जाना चाहिए जो उन्हें मानवीय मूल्यों व सामाजिक सरोकारों से जोड़े। दून विश्वविद्यालय देहरादून के डा. हरीशचन्द्र अंडोला ने कहा कि बच्चों के लिए लिखते समय हमें बाल मनोविज्ञान को समझते हुए बालसाहित्य लिखना होगा। संस्कृत अकादमी के शोध अधिकारी डा. हरिशचन्द्र गुरुरानी ने कहा कि पठन पाठन की संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए बतौर शिक्षक, साहित्यकार तथा अभिभावक पहले हम बड़े लोग पुस्तकें पढ़ने की आदत बनाएंगे तभी बच्चों से अपेक्षा की जा सकती है। नेताजी सुभाषचन्द्र बोस आवासीय छात्रवास के अधीक्षक योगेश्वर सिंह ने कहा कि भारत गाँवों का देश हैं। इसलिए जरूरी है कि ग्रामीण क्षेत्र के अपर्वंचित बच्चों के लिए मनोरंजक एवं प्रेरणादायी बालसाहित्य लिखा जाए। एडवांस मेडिकल सेन्टर के डा. पंकज पाराशर ने कहा कि बालसाहित्य पर्याप्त मात्रा में लिखा जा रहा है। इसे बच्चों तक पहुँचाना अपने आप में चुनोतीपूर्ण कार्य है। संस्था की अधयक्ष मीरा भारद्वाज ने बच्चों के लिए वैज्ञानिक ख़ष्टिकोण आधारित बालसाहित्य लिखे जाने की बात कही। संगोष्टी की अध्यक्षता करते हुए साहित्यकार प्रकाशचन्द्र पाण्डे ने कहा कि मोबाइल के आज के दौर में हम सब देश दुनिया के लोगों से जुड़ रहे हैं परन्तु अपने घर में सभी अपने-अपने मोबाइल पर चिपके हैं। घर के लोग घर में रहते हुए भी एक दूसरे से दूरी बनाए हुए हैं।

संगोष्ठी के मुख्य आयोजक बालप्रहरी के सम्पादक एवं बाल साहित्य संस्थान अल्मोड़ा के सचिव उदय किरौला ने बताया कि बाल प्रहरी, बाल साहित्य संस्थान एवं नेताजी सुभाषचन्द्र बोस छात्रवास लालढांग हरिद्वार के संयुक्त तत्वावधान में 8, 9 व 10 जून, 2023 को राष्ट्रीय बालसाहित्य संगोष्ठी एवं सम्मान समारोह का आयोजन लालढ़ांग, हरिद्वार में किया जा रहा है। इस संगोष्ठी में देश के विभिन्न राज्यों से लगभग 125 बाल साहित्यकार प्रतिभाग करेंगे। संचालन शिक्षक दिनेश रावत ने किया। संगोष्ठी में पौड़ी से आए शिक्षक एवं साहित्यकार डा. महेन्द्रसिंह राणा, अजीम प्रेमजी फाउंडेन से सौरभ पांडकर सोनू तिवारी, अशोक कुमार, प्रीति आदि ने भी अपने विचार रखे। बालप्रहरी परिवार से जुड़ी वृन्दा, प्राची तथा सपना आदि बच्चों ने भी अपने विचार रखे।

स्वास्थ्य एवं....

प्रथम पृष्ठ का शेष

आदि जैसे अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार मेलों में भागीदारी और 'मोटा अनाज' की थीम के साथ प्रचार में सहयोग के लिए योजनाएं तैयार हैं। बाजरे को बढ़ावा देने के लिए प्रमुख आयातकों/डिपार्टमेंटल स्टोर/सुपर मार्केट/हाइपर मार्केट श्रृंखला को भारतीय दूतावास के जरिए जोड़ा जाएगा और भोजन के नमूने व स्वाद चखने का अभियान आयोजित किया जाएगा। आईबीईएफ के सहयोग से लक्षित देशों और बाजारों में भारतीय मोटे अनाज की ब्रांडिंग/प्रचार किया जाएगा। सोशल मीडिया के जरिए भी प्रचार अभियान चलाया जाएगा।राजस्थान, महाराष्ट्र, कर्नाटक, गुजरात और मध्य प्रदेश भारत के पाँच बड़े मोटे अनाज के उत्पादक राज्य हैं। मोटे अनाज की 16 प्रमुख किस्में पैदा की जाती हैं जिसका उत्पादन और निर्यात किया जाता है। इसमें सोरघम (ज्वार), पर्ल मिलेट (बाजरा), फिंगर मिलेट (रागी), छोटे दाने वाला बाजरा (कंगनी), प्रोसो मिलेट (चेना), कोदो मिलेट (कोदो), बार्नयार्ड मिलेट सावाधसांवा/झांगोरा, छोटा बाजरा (कुटकी), दो छद्म बाजरा (बकवीट/कुट्टू), अमरंथ (चौलाई), ब्राउन टॉप बाजरा शामिल हैं। भारत से मोटे अनाज के निर्यात में मुख्य रूप से साबूत अनाज शामिल है और मोटेअनाज के मूल्यवर्धित उत्पादों की हिस्सेदारी नगण्य है। सरकार खाने के लिए तैयार (आरटीई) और परोसने के लिए तैयार (आरटीएस) श्रेणी के मूल्यवर्धित उत्पादों के निर्यात को बढ़ावा देने के लिए स्टार्टअप्स को भी तैयार कर रही है। इसमें नूडल्स, पास्ता, ब्रेकफास्ट अनाजों का मिश्रण, बिस्कुट, कुकीज, स्नैक्स, मिठाई आदि शामिल हैं। भारत के प्रमुख मोटा अनाज निर्यातक देश यूएई, नेपाल, सऊदी अरब, लीबिया, ओमान, मिस्र, ट्रड्यूनीशिया, यमन, यूके और यूएसए हैं। भारत से निर्यात की जाने वाले मोटे अनाज की किस्मों में बाजरा, रागी, कैनरी, ज्वार और कुट्टू शामिल हैं। सोरघम, कैनरी, बाजरा और रागी के निर्यात से अच्छे दाम देने वाले देशों में अमेरिका शीर्ष पर है जबकि सऊदी अरब कुट्टू और दूसरे मोटे अनाज निर्यात पर बेहतर रिटर्न देता है। आमतौर पर सोरघम (ज्वार) और अन्य मोटे अनाज की तुलना में कुट्टू को अच्छी कीमत मिलती है। दुनिया में मोटे अनाज का आयात करने वाले प्रमुख देशों में इंडोनेशिया, बेल्जियम, जापान, जर्मनी, मेक्सिको, इटली, अमेरिका, यूके, ब्राजील और नीदरलैंड हैं। अधुनिकता के इस दौड़ में न सिर्फ खान-पान की व्यवस्था में परिवर्तन आया है। बल्कि, खेती-किसानी भी बदल गई है। ज्यादा नहीं, आज से सिर्फ तीन दशक पहले हमारे खाने की परम्परा बिल्कुल अलग थी। हम मोटा अनाज खाने वाले लोग थे। मोटा अनाज मतलब- ज्वार, बाजरा, रागी (मडुआ), सवां, कोदों और इसी तरह के मोटे अनाज। लेकिन देखते ही देखते हमने गेहूं व चावल को अपनी थाली में सजा लिया और मोटे अनाज को खुद से दूर कर दिया। जिस अनाज को हमारी कई पीढियां खाते आ रही थी, उससे हमने मुँह मोड़ लिया और आजअब इस पोषक आहार की पूरी दुनिया में डिमाण्ड है। केन्द्र सरकार भी मोटे अनाज की खेती के लिए किसानों को प्रोत्साहित करने पर बल देना शुरू कर दी है। हमारे यहाँ दशकों से मोटे अनाज की खेती की परम्परा रही है। हमारे पूर्वज व किसान मोटे अनाज की उत्पादन पर निर्भर रहे है। कृषि वैज्ञानिक की माने तो देश में कुल खाद्यान्न उत्पादन में मोटे अनाज की हिस्सेदारी 40 फीसदी थी। मोटे अनाज के तौर पर ज्वार, बाजरा, रागी (मडुआ), जौ, कोदो, सामा, बाजरा, सांवा, लघु धान्य या कुटकी, कांगनी और चीना जैसे अनाज शामिल है। इसे मोटा अनाज इसलिए कहा जाता है क्योंकि इनके उत्पादन में ज्यादा मशक्कत नहीं करनी पड़ती। ये अनाज कम पानी और कम उपजाऊ भूमि में भी उग जाते हैं। धान और गेहूं की तुलना में मोटे अनाज के उत्पादन में पानी की खपत बहुत कम होती है। इसकी खेती में यूरिया और दूसरे रसायनों की जरूरत भी नहीं पड़ती इसलिए ये पर्यावरण के लिए भी बेहतर है।

प्रेरणादायक

मैरोली गाँव में मेहनत व लगन का परिणाम है शानदार बगीचा

सूरज लडवाल

चम्पावत। विकासखण्ड पाटी के गाँव मैरोली निवासी प्रकृति प्रेमी सतीश सिंह लडवाल ने तीस साल की मेहनत व लगन के बाद एक शानदार बगीचा तैयार किया है। उनका ग्रीन सिटी आवास किसी पर्यटक स्थल से कम नहीं है। क्योंकि यहाँ दर्जनों प्रकार के फूल, फल और जड़ी-बूटियों का संग्रह है।

जीवन के अमूल्य 30 साल की मेहनत के बाद श्री लडवाल बताते हैं कि पथरीली भूमि पर पेड़ लगाना बहुत चुनौती का काम था। शुरुआत में पेड़ दो-तीन सालों में सूख गये लेकिन उन्होंने हिम्मत नहीं हारी और पेड़ों की जड़ों में मिट्टी भरकर पेड़ लगाए। पथरीली भूमि पर मिट्टी भरकर सैकड़ों पेड़ लगाना कोई आसान बात नहीं है। अब तीस साल की मेहनत के बाद यह बगीचा धीरे-धीरे रंग ला रहा है। यहाँ कई किस्म के फलों का उत्पादन भी हो रहा है।

प्रकृति प्रेमी लडवाल कहते हैं कि हमारी आने वाली पीढ़ी को स्वच्छ वातावरण प्रदान करना हमारी जिम्मेदारी है। पेश से लडवाल शिक्षा विभाग में अनुसेवक के रूप में कार्य करते हैं। राजकीय कन्या इण्टर कालेज पाटी में सेवा दे रहे लडवाल का प्रकृति से लगाव देखकर हर कोई उनकी सराहना करना नहीं भूलता।

ग्रीन सिटी आवास में जिन फलों का उत्पादन हो रहा है उसमें स्ट्राबेरी, प्लम, अनार, सेव, अखरोट, सन्तरा, नींबू, खुमानी, नाशपाती, अमरूद, काफल, आड़ू, बेड़ू, तिमुला आदि प्रमुख हैं। साथ ही जड़ी बूटियों में गिलोय, पत्थरचट्टा, तिमूर, छतावर, गेठी, हल्दी आदि हैं।

हत्याकाण्ड

खूनी बना छलिया नर्तक, पत्नी सहित चार को मौत के घाट उतारा

पि.हि.प्रतिनिधि

गंगोलीहाट। भोगवादी दुनियादारी की छाया ने सामाजिक विकृतियों को बढ़ावा दिया है। हालात यह है कि अपना ही भला बुरा न समझते हुए मार-काट होने लगी है। बुरसम गाँव के छलिया नर्तक सन्तोष राम भी ऐसी विकृति का शिकार हुआ जिसने अपनी पत्नी सहित चार सदस्यों को बड़ियाठ (धारदार बड़ी दरांती) से काट डाला। इससे पूरे इलाके में दहशत और अशान्ति है।

बोकाट पट्टी के बुरसम गाँव के चन्तोला तोक निवासी सन्तोष ने अपने पड़ोस में रहने वाली ताई हेमन्ती देवी(70), चचेरी भाभी रमा देवी (26), मायके आई चचेरी बहन माया देवी, अपनी पत्नी चन्द्रकला को मौत के घाट उतार दिया। आपसी रंजिश के कारण सन्तोष ने अपने ताऊ के घर जाकर सो रही तीन महिलाओं की गर्दन काटी। उसकी दूसरी ताई गोठ में छिपने के कारण बच गई। हल्ला मचने पर जब हत्यारोपी के घर में देखा गया तो उसकी पत्नी की भी हत्या हो चुकी थी।

12 मई को सन्तोष द्वारा खेले गये खूनी खेल से सभी दंग हैं क्योंकि सन्तोष जिस खुशनुमा माहौल में वह पला-बढ़ा अपने उन दिनों को भूलकर वह राक्षसी प्रवृत्ति का हो गया। वह छलिया नर्तक दल का प्रमुख है। हत्यारोपी का चचेरा भाई प्रकाश भी छलिया नर्तक है। वह छलिया नृत्य करने कपकोट गया था। उसे सुबह सात बजे पत्नी, माँ, बहन की हत्या की सूचना मिली।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

ग्रीष्मकालीन पर्यटन, धार्मिक यात्रा सीजन में हार्दिक शुभकामनाएं-

डॉ. एन. एस. गनघरिया

ग्राम- छड़ायल सुयाल,
हिमालयन कालोनी,
मानपुर पश्चिम
हल्द्वानी

खड़क सिंह बगड्वाल

कार्यकारी अध्यक्ष
उक्रांद
जगदम्बा नगर
हल्द्वानी

रमेश सिंह जंगपांगी

उत्तरांचल विहार
जोहार नगर
भोटिया पड़ाव
हल्द्वानी

के.आर.सिंह

एडवोकेट
मधुवन इन्क्लेब,
रेशम बाग के पास,
गैस गोदाम रोड
कुसुमखेड़ा
हल्द्वानी

होटल माँ नन्दादेवी एण्ड बारात घर
नानासेम, मुनस्यारी

गणेश सिंह मर्तोलिया एण्ड सन्स
मुनस्यारी

हार्डवेयर, बिल्डिंग मैटीरियल एवं जनरल आर्डर सप्लायर्स
फोन सम्पर्क- 05961-222236
8958525979, 9411134775

Hotel Bala Paradise
Tiksain, Munsiari
Ph. 05961222237, 9412951678

Enjoy Beauty of Himalaya at
MARTOLIA LODGE
Family Guest House- Sarmoly, Munsiyari
A Home Away From Home & Home Stay
Phone: (05961) 222287

धमोत होम स्टे
धरमघर/चकोड़ी
(एडवेंचर जोन, ट्रेकिंग,माउंटेन वाइकिंग, स्थानीय व्यंजन)
मो. 9760007148
www.mountainheights.in

MARTOLIA FURNITURE
A unit of Martolia Enterprises
Pilikothi
Haldwani
Mob- 8057167777, 7906752084, 8650427229

सप्ताह के पर्व

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष
22 मई- रम्भा तीज
25 मई- अरण्य षष्ठी
28 मई- धूमावती जयन्ती
30 मई- गंगा दशहरा

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक श्रीमती गीता उप्रेती द्वारा पिघलता हिमालय, जे०के०पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी (नैनीताल) उत्तराखण्ड से प्रकाशित एवं शक्ति प्रेस, कालाढूंगी रोड, हल्द्वानी (नैनीताल) से मुद्रित।

सम्पादकः श्रीमती गीता उप्रेती
फोन/फैक्सः (05946) 264013, 9458961490, 9411770280, 9411301014, 9410713075,
editorpighaltahimalay@gmail.com
Website-
www.pighaltahimalay.com
पत्र व्यवहार के लिये पते-
जे0के0पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी (नैनीताल)

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)